इन्द्र धनुष रौंदे हुए ये

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-7)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

इन्द्र धनुष रौंदे हुए ये

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-7)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

प्रस्तावना-पृष्ठभूमि	**4**
शीर्षक	**4**
जीवन-भाव-विवेचन-कविताओं का वर्गीकरण	
(1) जीवन-दृष्टि	**10**
(2) वैश्विक/ विराट् चेतना	**19**
(3) काल-बोध और मिथकीय चेतना	**24**
(4) कवि-कर्म/ रचना-प्रक्रिया	**26**
(5) सामाजिक/ राजनैतिक सरोकार	**41**
(6) प्यारा/ रूप-चित्रण	**52**
(7) प्रकृति	**55**
(8) छोटी कविताएँ	**59**
(9) लीला-भाव	**64**
मूल्यांकन/निष्कर्ष	
अभिव्यक्ति-विधान	
तद्भव/बोली के शब्द	
बिम्ब विधान	
प्रकृति से चुने गए बिम्ब	
काल को रूपायित करने वाला बिम्ब	
असम्बद्ध बिम्ब-योजना	

नगर जीवन से उठाए गए बिम्ब

वनस्पतियाँ-वृक्ष

पक्षी-पशु

इन्द्र धनु रौंदे हुए ये

प्रस्तावना : 'इन्द्र धनु रौंदे हुए ये' का प्रकाशन वर्ष सन् 1957 है। इस संग्रह में कुल साठ रचनाएँ हैं जिंनका रचनाकाल जनवरी सन् 1954 से मई सन् 1956 तक है। केवल एक अपवाद है 'मालाबार का एक दृश्य' शीर्षक कविता जिसका रचनाकाल सन् 1951 है। इस में दो अप्रकाशित रचनाएँ 'अतिथि सब गए' तथा 'भर गया गगन में घुआँ' (रचना काल क्रमश: अक्टूबर 1954 तथा अगस्त 1955) भी शामिल है। संग्रह की साठ में से बाईस रचनाएँ जून 1955 से फरवरी 1956 के बीच विदेश में लिखी गयी हैं। हम ने इस संग्रह की रचनाओं को भी, 'बावरा अहेरी' के साथ संधिकाल की रचनाएँ कहा है। बावरा अहेरी' के विवेचन-प्रसंग में इस का स्पष्टीकरण दिया जा चुका है।

पृष्ठ भूमि : इस संग्रह की रचनाओं की पृष्ठ भूमि में गहरे विषाद की करुण छाया लक्ष्य करते हुए डॉ . राम कमल राय ने लिखा है-

'गहरे रागबन्ध की सफल परिणति नहीं हो पा रही थी और अज्ञेय को लग रहा था कि ऐसे में यह प्रसंग समाप्त ही हो जाये तो अच्छा। ऐसी मानसिक स्थिति में अज्ञेय का मन एरक करुण विषाद में डूबा था, जिसकी भूमि गहरे प्रणय से सिक्त थी। 'इन्द्र धनु रौंदे हुए ये' की अनेक कविताओं में इस मीठी कसक के दर्शन होते है।'[1] डॉ. राय का इशारा कपिला जी के साथ अज्ञेय के प्रणय प्रसंग की ओर है। उन्होंने अपने मत की पुष्टि में संग्रह की 'एक दिन जब' कविता उद्धृत की है। संदर्भित कविता का एक अंश इस प्रकार है -

'एक दिन जब
प्यार से, संघर्ष से, आक्रोश से, करुणा-घृणा से, रोष से,

[1] डॉ. रामकमल राय, शिखर से सागर तक पृष्ठ, 104, 249

विद्वेष से, उल्लास से,

निविड सब संवेदनाओं की सघन अनुभूति से

बंधा वेष्टित, विद्धजीवन की अनी से

स्वयं अपन प्यार से

एक दिन जब/हाय ! पहली बार!

जानूँगा कि जीवन

जो कभी हारा नहीं था, हारता ही किसी से जो नहीं,

अपने से चला अब हार :

एक दिन-उस दिन-जिसे अपनी पराजय भी

दे सकूँगा समुद, निःसंकोच

उसी को आज अपना गीत देता हूँ।‘[2]

वैसे अज्ञेय ने भिन्न संदर्भ मैं यह कविता ('एक दिन जब') उद्‌धृत की है। संदर्भ है स्वीडन के नुओल्या पर्वत-शिखर की चढ़ाई का- 'मैं और आकाश और दुर्गम चढ़ाई और अलक्षित, किन्तु मन में दृढ़ता पूर्वक धारण किया गया शिखर जो मेरा लक्ष्य है' -इसके बाद पूरी कविता उद्‌धृत है। ('एक बूँद सहसा' उछली, पृष्ठ, 160)

डॉ. राय के मत का खण्डन करना हमारा उद्देश्य नहीं है लेकिन उस में इतना जोड़ देने की आवश्यकता है कि प्रणय के अतिरिक्त अन्य दृष्टियों से भी यह कालखण्ड अज्ञेय के जीवन में विशेष महत्त्व रखता है। सन् 1955-56 का समय, आल इण्डिया रेडियो की नौकरी छोड़ कर, अज्ञेय की प्रथम यूरोप-

[2] सदानीरा भाग-1 पृष्ठ, 292